Lovecraft horror- The Curse of Yig

सर्पमानव

एच.पी. लवक्राफ्ट

(जीलिया बिशप के साथ)

अनुवादक

जयदीप शेखर

Cover photo credit: Illustration by: Hugh Rankin (1929)

सर्पमानव

अँग्रेजी डरावनी कहानी 'द कर्स ऑव यिग' (1928) का हिन्दी अनुवाद

लेखक

एच.पी. लवक्राफ्ट

(जीलिया बिशप के साथ)

अनुवादक

जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

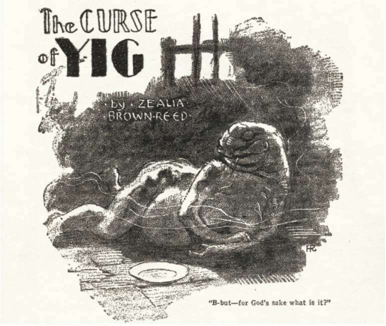

Cover Photo Credit

Drawing published with this story in the 'Weird Tales' magazine in 1929

Illustration by: Hugh Rankin

-: Hindi eBook :-

SARPAMANAV

(The Snake-human)

Hindi translation of the English horror story 'The Curse of Yig' (1928).

Original author: Howard Phillips Lovecraft (1890-1937)

with Zealia Bishop (1897-1968)

Hindi translation: Jaydeep Das

(Pen Name: Jaydeep Shekhar)

Copyright © 2023: Translator

Published by:

JagPrabha

Barharwa (SBG), JH- 816101

jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com

Price: ₹ 55.00

***

अध्याय

सर्पमानव 5

किंवदन्तियाँ 5

सर्पमानव? 8

यिग 9

वाकर और ऑड्रे 11

रैटल साँप के बच्चे 13

विचिता में नया जीवन 15

शरद ऋतु 18

हैलोवीन 19

वह अभिशप्त रात 21

यिग का आविर्भाव? 24

उपसंहार 26

परिशिष्ट 29

कहानी में वर्णित भौगोलिक क्षेत्र 29

रैटल साँप 30

लेखक परिचय 31

एच.पी. लवक्राफ्ट का रचना-संसार 33

सर्पमानव

किंवदन्तियाँ

1925 में मैं ओक्लाहोमा गया था साँपों से जुड़ी किंवदन्तियाँ एकत्र करने। वहाँ से मैं साँपों के प्रति ऐसा भय मन में लेकर लौटा, जो जीवन भर मेरा पीछा नहीं छोड़ेगा। मैं मानता हूँ कि यह मूर्खता है, क्योंकि जो कुछ भी मैंने देखा और सुना, उन सबकी तार्किक व्याख्या दी जा सकती है, लेकिन फिर भी मेरा मन उस भय से उबर नहीं पा रहा है। अगर बात सिर्फ एक पुरानी कहानी की होती, तो मेरी यह हालत नहीं होती। एक अमरीकी–रेड-इण्डियन नृवंशविज्ञानी के रूप में अपने काम के दौरान मैं ऐसी अजीबो-गरीब किंवदन्तियाँ सुनने का आदि हो गया हूँ और मैं जानता हूँ कि बात अगर अजीबो-गरीब कल्पनाओं की हो, तो हम गोरी चमड़ी वाले लाल चमड़ी वाले रेड-इण्डियन को मीलों पीछे छोड़ सकते हैं। ...लेकिन मैंने वहाँ गुथरी के पागलखाने में अपनी आँखों से जो देखा, वह मैं कभी नहीं भूल सकता!

मैं उस पागलखाने में इसलिए गया था कि कुछ बुजुर्ग बासिन्दों ने मुझसे कहा था कि वहाँ मुझे कुछ महत्वपूर्ण जानकारी मिलेगी। दरअसल, सर्पदेवता से जुड़ी जिन किंवदन्तियों का मैं पता लगाना चाहता था, उन पर न तो वहाँ रहने वाले रेड-इण्डियन चर्चा करना चाह रहे थे और न ही गोरे लोग। बेशक, तेल की खोज में आने वाले नये लोग इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते थे, लेकिन जो गोरे लोग वहाँ के पुराने बासिन्दे थे, वे और स्थानीय रेड-इण्डियन– मेरी जिज्ञासा सुनकर एकदम से भयभीत हो जाया करते थे। करीब छह-सात लोगों ने मुझसे उस पागलखाने का जिक्र किया और यह जिक्र उन्होंने बड़ी सावधानी के साथ फुसफुसाते हुए किया। साथ में उन लोगों ने यह भी जोड़ा कि डॉ. मैक’नील मुझे पुरा महत्व की कोई भयानक चीज दिखा सकते हैं और वो सब मुझे बता सकते हैं, जो मैं जानना चाहता हूँ। वे इस बात की भी व्याख्या कर देंगे कि क्यों मध्य ओक्लाहोमा में सरीसृपों के अर्द्धमानव पिता ‘यिग’ का इतना भय एवं आतंक

व्याप्त है और क्यों यहाँ बाहर से आकर बसने वाले शरत काल के दिनों व रातों में सिहर उठते हैं, जब दूर कहीं रेड-इण्डियन की बस्तियों से वे नगाड़ों की लगातार ढम-ढम सुनते हैं!

जैसे शिकारी कुत्ते को गन्ध मिल गयी हो, कुछ उस तरह से मैं जा पहुँचा गुथरी। मैं चूँकि बीते कई वर्षों से रेड-इण्डियन लोगों के बीच प्रचलित सरीसृप-पूज़ा की पद्धतियों में हो रहे बदलावों से सम्बन्धित तथ्यादि एकत्र कर रहा था, इसलिए किंवदन्तियों एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर मेरा ऐसा पूर्ण विश्वास था कि महान सर्पदेवता क्वेजलकोट्ल– मेक्सिकन लोगों (एज्टेक सभ्यता) के दयालु सर्पदेवता– से भी प्राचीन एवं अज्ञात एक सर्पदेवता का अस्तित्व जरूर होगा। हाल के महीनों में ग्वाटेमाला से लेकर ओक्लाहोमा तक के मैदानी इलाकों में अपनी शोध की शृंखला के दौरान मैं उक्त विश्वास के काफी निकट पहुँच चुका था, लेकिन अभी भी सब कुछ उलझा हुआ और अधूरा था। कारण वही– स्थानीय लोगों में व्याप्त सर्प-सम्बन्धी भय एवं गोपनीयता।

अब मुझे मेरी शोध के लिए प्रचुर मात्रा में नये तथ्यादि मिलने की सम्भावना नजर आयी और सच तो यह है कि पागलखाने के प्रमुख से मिलते समय मैंने अपनी उत्सुकता को दबाने की कोशिश भी नहीं की। डॉ. मैक'नील अधेड़ उम्र और नाटे कद के क्लीन-शेव्ड सज्जन थे। उनकी बातचीत एवं व्यवहार से जल्दी ही मैं समझ गया कि अपने पेशे से बाहर की चीजों के बारे वे कोई खास जानकारी नहीं रखते थे। जब मैंने यहाँ आने के अपने उद्देश्य के बारे में बताया, तो उनका चेहरा एकबारगी गम्भीर हो गया और उन्होंने सन्देह भरी निगाहों से मुझे देखा। फिर उन्होंने बड़े गौर से शोधकार्य सम्बन्धी मेरे कागजातों और उस पत्र का निरीक्षण किया, जो एक पूर्व इण्डियन एजेण्ट[1] ने मुझे दिया था।

"अच्छा, तो आप यिग की किंवदन्तियों पर शोध कर रहे हैं– क्यों?" उन्होंने प्रतिक्रिया दी– लगा कि मुझ पर उन्हें भरोसा हुआ था।

"मैं जानता हूँ कि– " उन्होंने कहना जारी रखा, "–ओक्लाहोमा के कई नृवंशविज्ञानियों ने यिग को क्वेजलकोट्ल से जोड़ने की कोशिश की है, पर मुझे नहीं लगता कि उनमें से कोई बीच की खोयी हुई कड़ियों को जोड़ पाने में सफल

---

[1] उन दिनों अमेरिका में सरकार की ओर से ऐसे अधिकारी नियुक्त किये जाते थे, जो गोरों की ओर से रेड-इण्डियन लोगों के साथ सम्पर्क रखते थे, इन्हें 'इण्डियन एजेण्ट' कहा जाता था।

हो पाया है। अपनी युवा उम्र के लिहाज से आपका काम बहुत बढ़िया है और इसलिए मेरे पास जो भी जानकारियाँ हैं, वो मैं आपको दूँगा।

“जहाँ तक मेरा अनुमान है, बूढ़े मेजर मूर ने या किसी और ने भी आपको यह नहीं बताया होगा कि यहाँ मेरे पास क्या रखा हुआ है। वे इसके बारे में बात करना पसन्द नहीं करते– पसन्द तो खैर, मैं भी नहीं करता हूँ। असल में, सारा मामला बहुत दर्दनाक और बहुत ही भयानक है, लेकिन जो है, तो है। मैं इसे पारलौकिक नहीं मानता हूँ। इसके पीछे एक लम्बी कहानी है, वह मैं आपको बाद में सुनाऊँगा– उसे देखने के बाद। यह एक शैतानी दुखान्त कहानी है, लेकिन मैं इसे जादू नहीं मानता। यह विश्वास की पराकाष्ठा का परिणाम है। मैं मानता हूँ कि कभी-कभी मेरा शरीर ही नहीं, आत्मा तक सिहर उठती है उसे देखकर, लेकिन बाद में मैं मानकर चलता हूँ कि यह मेरी स्नायुदुर्बलता होगी। अफसोस कि अब मैं कोई नौजवान तो रहा नहीं!

“सीधे-सीधे कहूँ, तो मेरे पास जो चीज है, उसे आप यिग के अभिशाप का शिकार कह सकते हैं– एक जीता-जागता शिकार! मैं नर्सों को उसे देखने भी नहीं देता हूँ, हालाँकि उनमें से ज्यादातर उसके बारे में जानती हैं। केवल दो पुराने और विश्वस्त लोग हैं, जो उसे भोजन देते हैं और उसके केबिन की साफ-सफाई करते हैं– पहले तीन थे, लेकिन बूढ़े स्टिवेन्स बेचारे का कुछ वर्षों पहले देहान्त हो गया। मुझे लगता है कि जल्दी ही उसकी देखभाल के लिए मुझे युवा लोगों का एक नया दल तैयार करना पड़ेगा, क्योंकि उस जीव की न तो उम्र बढ़ती हुई नजर आ रही है और न ही उसमें कोई शारीरिक बदलाव आ रहा है– और हम पुराने लोग तो हमेशा के लिए रहेंगे नहीं! हो सकता है कि निकट भविष्य में नीति का पालन करते हुए हमें उसे कैद से छोड़ना पड़े– वैसे, अभी कुछ कह पाना मुश्किल है।

“यहाँ आते समय भवन के पूर्वी हिस्से में जमीन से लगी बेसमेण्ट की शीशे वाली खिड़की पर ध्यान गया था आपका? वह वहीं पर है। अभी मैं खुद आपको वहाँ ले चलूँगा। कोई टोका-टाकी नहीं कीजिएगा, बस दरवाजे पर लगे पैनल को सरकाकर देख लीजिएगा और ईश्वर को धन्यवाद दीजिए कि अभी दिन की रोशनी कम हो गयी है। इसके बाद मैं आपको वह कहानी सुनाऊँगा– कहने का मतलब, जितना मैं जान पाया हूँ, उतना।”

सर्पमानव?

हम लोग चुपचाप सीढ़ियों से नीचे उतरे। बिना एक शब्द बोले हम निर्जन बेसमेण्ट के टेढ़े-मेढ़े गलियारों से गुजरने लगे। डॉ. मैक’नील ने भूरे रंग के एक लोहे के दरवाजे को खोला, लेकिन यह एक अतिरिक्त दरवाजा था। कुछ दूर और चलने के बाद वे एक दरवाजे के सामने रूके, जिस पर B 116 लिखा हुआ था। पंजों पर खड़े होकर उन्होंने दरवाजे पर बने पैनल को सरकाया और लोहे के दरवाजे को उँगली से कई बार ठकठकाया, जैसे कि अन्दर रहने वाले को– चाहे वह जो भी हो– वे जगाना चाह रहे हों।

डॉक्टर ने जब पैनल को सरकाया, तो हल्की-सी एक बदबू बाहर आयी थी और मुझे ताज्जुब हुआ कि उनकी ठकठकाहट के प्रत्युत्तर में अन्दर से क्षीण हिस्स की आवाज सुनायी पड़ी। अन्त में, उन्होंने मुझे ईशारा किया कि मैं उनकी जगह पर खड़े होकर अन्दर झाँकूँ। बिना किसी कारण के बुरी तरह डरते हुए मैंने ऐसा ही किया। दूसरी तरफ जमीन की सतह से सटी शीशे की खिड़की से बहुत ही मद्धम पीली रोशनी अन्दर आ रही थी और मुझे उस बदबूदार कमरे में कई सेकेण्ड तक नजरें इधर-उधर दौड़ानी पड़ीं– फूस से ढके फर्श पर रेंगती और ऐंठती हुई उस चीज को देखने से पहले, जो रह-रहकर क्षीण स्वर हिस्स-हिस्स की आवाज पैदा कर रही थी। धीरे-धीरे उस चीज की आकृति मेरी निगाहों में स्पष्ट हुई और मुझे ऐसा लगा कि रेंगती हुई यह आकृति कुछ हद तक इन्सानों-जैसी थी, जो पेट के बल लेटी हुई थी! मैंने सहारे के लिए दरवाजे के हैण्डल को जोर से थाम लिया, क्योंकि मुझे चक्कर आ गया था।

वह रेंगती हुई चीज इन्सानी आकार-प्रकार की थी– पूरी तरह निर्वस्त्र। शरीर पर कहीं बाल नहीं थे, जबकि उसकी पीठ पर पीलापन लिये भूरे रंग के शल्क कमरे की मद्धम रोशनी में साफ नजर आ रहे थे। कन्धों पर भूरे धब्बे थे और सिर विचित्र ढंग से सपाट था। जब उसने मुझ पर फुंफकारने के लिए सिर उठाया, तो मैंने उसकी छोटी-छोटी काली आँखों को देखा, जो लगीं तो इन्सानी आँखों जैसी ही, लेकिन मुझमें ध्यान से देखने का साहस नहीं था। उन आँखों की डरावनी निगाहें मुझ पर एकटक जमी हुई थी। मैंने हाँफते हुए पैनल को बन्द कर दिया।

मनुष्य और साँप के मिले-जुले रंग-रूप वाले उस प्राणी को एक छोटे कमरे की भूतिया रोशनी में फर्श पर पड़े फूस पर रेंगते और ऐंठते हुए देर तक देख पाना मेरे लिए सम्भव नहीं था। मेरे कदम जरूर लड़खड़ा गये थे, क्योंकि डॉक्टर ने नर्मी के साथ मेरी बाँह को थामा और मुझे लेकर वहाँ से लौटने लगे। मैं लड़खड़ाती जुबान से बार-बार दुहरा रहा था, “भ- भगवान के लिए... यह क्या था?”

जब उन्होंने मुझे यिग और उस जीव की कहानी सुनायी, तब मैं डॉ. मैक’नील के व्यक्तिगत दफ्तर में उनके सामने एक आरामकुर्सी पर हाथ-पाँव फैलाये पसरा हुआ था। दोपहर बाद की सुनहरी धूप ढलकर बैंगनी गोधूली में बदल गयी, लेकिन मैं मुँह बाये बिल्कुल निश्चल होकर कहानी सुनता रहा। मैं टेलीफोन और बजर की प्रत्येक घण्टी पर झल्ला रहा था और बीच-बीच में डॉक्टर को उनके बाहर वाले दफ्तर में थोड़ी-थोड़ी देर के लिए बुलाने वाली नर्सों और इनटर्न पर कुढ़ रहा था– मन कर रहा था कि काश, मैं उन्हें श्राप दे सकता! रात हुई और मुझे खुशी हुई यह देखकर कि मेरे मेजबान ने सारी बत्तियाँ रोशन कर दीं। हालाँकि मैं एक वैज्ञानिक था, लेकिन इस रोमांचक कहानी को सुनते हुए मारे उत्तेजना के मेरी हालत ऐसी हो गयी थी कि अपनी शोध की बात मैं लगभग भूल ही गया था। मेरी हालत उस बच्चे-जैसी हो गयी थी, जिसे चिमनी के एक कोने में बैठाकर कोई फुसफुसाते स्वर में चुड़ैलों की कहानी सुना रहा हो!

यिग

डॉक्टर ने कहानी शुरू की–

मध्य भाग के मैदानों में रहने वाली जनजातियों के सर्पदेवता हैं यिग। अनुमान है कि दक्षिणी भाग में सर्पदेवता माने जाने क्वेजलकोट्ल या कुकुल्कान के ये आदिपुरूष हैं। यिग एक अर्द्धमानव देवता हैं, जो स्वभाव से स्वेच्छाचारी और सनकी हैं। हालाँकि ये पूरी तरह से दुष्ट या शैतान नहीं हैं, बल्कि जो लोग इन्हें और इनकी सन्तानों– सरीसृपों– को उचित सम्मान देते हैं, उनके प्रति इसका व्यवहार अच्छा होता है, लेकिन शरत काल में ये भयानक रूप से भूखे हो जाते हैं और तब तरह-तरह के विधि-विधानों से इन्हें दूर रखा जाता है। इसी कारण से पॉवनी, विचिता और कैडो जनजातियों के कबीलों से अगस्त, सितम्बर और

अक्तूबर के महीनों में हफ्तों तक नगाड़ों के ढम-ढम की आवाजें सुनायी पड़ती हैं। उस दौरान उनके ओझा लोग डरावने स्वर में इस तरह से मंत्रपाठ करते हैं कि देखकर एकबारगी प्राचीन एज्टेक और माया सभ्यता के दौर में पहुँच जाने का अहसास हो जाय!

यिग की खासियत है– अपने बच्चों के प्रति उसका बहुत ज्यादा लगाव। यह लगाव इतना गहरा है कि इस इलाके में बहुतायात में पाये जाने वाले जहरीले रैट्ल साँपों से लाल चमड़ी वाले सभी लोग खुद को बचाकर चलते हैं– कोई उन्हें क्षति पहुँचाने की सोच भी नहीं सकता! प्रचलित किंवदन्ती के अनुसार, अगर किसी ने यिग की सन्तान को– यानि रैट्ल साँप को, या किसी भी रेंगने वाले जीव को– क्षति पहुँचायी, तो यिग पहले तो उस व्यक्ति को भरपूर यातनाएं देंगे और उसके बाद उस व्यक्ति को वे एक धब्बेदार साँप में बदल देंगे!

डॉक्टर का कहना जारी रहा–

पुराने दिनों में इण्डियन लोगों के इलाकों में यिग को लेकर इतनी गोपनीयता नहीं बरती जाती थी। खासकर, मैदानी इलाकों की जनजातियाँ रेगिस्तानी खानाबदोशों और दूर-दराज के कबीलेवालों के मुकाबले ज्यादा सावधानी नहीं बरतती थीं और खुलकर अपनी किंवदन्तियों एवं शरत्कालीन उत्सवों के बारे में बताती थीं। दरअसल, ये जनजातियाँ चाहती थीं कि उनकी किंवदन्तियाँ आस-पास बसने वाली गोरों की बस्तियों में पहुँच जाय, इसलिए एजेण्टों से वे इनका जिक्र करते थे। भय का वातावरण बना 1889 के ‘land-rush’ के दिनों में, जब गोरी चमड़ी वालों द्वारा अन्धाधुन्ध तरीके से जमीन दखल करने और गोरों की बस्तियाँ बसाने का दौर शुरू हुआ। उस दौर में कुछ विचित्र घटनाएं घटने की अफवाहें फैलीं, जो आज तक कायम हैं। ये अफवाहें ही यिग के खौफ का प्रमाण बन गयीं। इण्डियन लोगों ने आरोप मढ़ा कि नये आने वाले गोरे लोग यिग का सम्मान नहीं करते, इसलिए ये घटनाएं घटीं। बाद के दिनों में यहाँ बसने वाले गोरों ने भी इस बात को स्वीकार किया। आज स्थिति यह है कि मध्य ओक्लाहोमा का कोई भी पुराना बासिन्दा– वह गोरा हो, या लाल– सर्पदेवता के बारे में एक शब्द भी बोलने के लिए राजी नहीं होगा– इधर-उधर की एकाध टीका-टिप्पणी के सिवा।